



देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

PM मोदी और भारतीय पायलट कैप्टन स्मित को जरायल का खास न्योता, नेतन्याहू ने साहस को सराहा



भारतार्थ खबर
Bhaaraataarth.com
संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 5 अक्टूबर 2026 |
इजरायल के प्रधानमंत्री बेजाकिन नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय पायलट कैप्टन रिम्ट मच्छर को इजरायल के आगामी स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है। नेतन्याहू ने कैप्टन रिम्ट से बातचीत के दौरान संकट की घड़ी में उनके साहस, धैर्य और निष्पक्षता की सराहना की। नेतन्याहू ने कैप्टन रिम्ट को भारत, इजरायल और दुनिया के लिए एक प्रेरणादायी नायक बताते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में उनके साहस ने यात्रियों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कैप्टन रिम्ट और प्रधानमंत्री मोदी को स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष सम्मान के

तीर पर मशाल प्रज्वलित करने का निमंत्रण दिया। कॉकपिट में हमले के बावजूद संभाला मोर्चा यह सम्मान उस घटना के बाद सामने आया है, जिसमें दुर्बई से तेल अवीव आ रही पलाइंदुर्बई की उड़ान के कॉकपिट में कथित तौर पर कैप्टन स्मित पर उनके सह-पायलट ने हमला किया था। विमान में उस समय 174 यात्री सवार थे। घटना के दौरान गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद कैप्टन स्मित ने स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास किया। उपलब्ध विवरण के अनुसार, उन्होंने कॉकपिट का दरवाजा खुलाने में सफलता हासिल की, जिसके बाद यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को कॉकपिट तक पहुंचने के स्थिति संभालने का अवसर मिला। इससे बाद विमान को सुरक्षित रूप से सऊदी अरब के तबुक में उतारा गया। संकट के बीच विमान की सुरक्षित लैंडिंग को कैप्टन और चालक दल की सूझबूझ से जोड़कर देखा जा रहा है। नेतन्याहु ने की साहस और निर्णय क्षमता की

शरणा केटन स्मित से बातचीत के दौरान नेतन्याहू ने उनकी बहादुरी और विपरीत परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता की विशेष रूप से सराहना की। उन्होंने केटन स्मित के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की। इजरायल के स्वतंत्रता दिवस समारोह में मशाल प्रज्वलित करना प्रतिष्ठित सम्मान माना जाता है। नेतन्याहू ने संकेत दिया कि यह सम्मान सामान्यतः इजरायली नागरिकों को दिया जाता है, लेकिन केटन स्मित के असाधारण साहस को देखते हुए उन्हें इस विशेष अवसर के लिए आमंत्रित किया गया है। प्रधानमंत्री मोदी भी कर चुके हैं बातचीत घटना के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी केटन स्मित से बातचीत की थी। प्रधानमंत्री ने उनके साहस और कठिन परिस्थिति में दिखाई गई सूझबूझ की सराहना करते हुए उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की थी। अब इजरायल की ओर से स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए आया यह विशेष निमंत्रण

केटन स्मित के साहस को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान के रूप में देखा जा रहा है। साथ ही, यह भारत और इजरायल के बीच मजबूत संबंधों के मानवीय और प्रतीकात्मक पक्ष को भी सामने लाता है। संकट में धैर्य और जिम्मेदारी की मिसाल केटन स्मित की घटना ने विमानन क्षेत्र में संकट की परिस्थितियों के दौरान पायलट के धैर्य, निर्णय क्षमता और जिम्मेदारी के महत्व को रेखांकित किया है। कठिन परिस्थिति में यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए स्थिति संभालने की उनकी भूमिका अब व्यापक चर्चा का विषय बन गई है। इजरायल के स्वतंत्रता दिवस समारोह में प्रधानमंत्री मोदी और केटन स्मित को आमंत्रित किया जाना इस पूरे घटनाक्रम को एक विशेष अंतरराष्ट्रीय पहचान देता है। समारोह में मशाल प्रज्वलित करने का अवसर केटन स्मित के साहस और कर्तव्यनिष्ठ के सम्मान के रूप में देखा जा रहा है।

एशियन गेम्स में भारत की बेटियों का जलवा, महिला गोल्फ टीम ने जीता रजत

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 5 अक्टूबर 2026
एशियन गेम्स 2026 में भारतीय महिला
खिलाडियों ने शानदार प्रदर्शन करते
हुए देश के पदक अभियान में एक
और महत्वपूर्ण उपलब्धि जोड़ दी।

एशियन गेम्स में महिला व्यक्तिगत गोल्फ का स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला गोल्फर बनीं। व्यक्तिगत स्पर्धा में उनकी सफलता के बाद टीम स्पर्धा में रजत पदक ने उनके अभियान को और खास बना दिया। अदिति अशोक और दीक्षा डागर ने भी निभाई अहम भूमिका।

से सामने रखा। प्रधानमंत्री मोदी ने दी बधाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय महिला गोल्फ टीम की उपलब्धि पर अदिति आशोक, प्रणवी शर्मा उर्स और दीक्षा डागर को बधाई दी। उन्होंने खिलाड़ियों के प्रदर्शन को उनके परिश्रम, दृढ़ संकल्प और खेल के प्रति समर्पण का परिणाम बताया तथा भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री की बधाई के बाद भारतीय महिला गोल्फ टीम की यह उपलब्धि राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में रही। खिलाड़ियों के प्रदर्शन को देश में गोल्फ के बढ़ते प्रभाव और महिला खिलाड़ियों की मजबूत होती भागीदारी के रूप में भी देखा जा रहा है। युवा खिलाड़ियों के लिए मेरेणा एशियन गेम्स में भारतीय महिला गोल्फ टीम का रजत पदक केवल पदक तालिका में जल



अनुभवी गोल्फर अदिति अशोक ने अंतिम दौर में 67 का शानदार स्कोर के दर्ज किया और टीम को मजबूत स्थिति में बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दोक्षा डागर ने भी टीम के लिए महत्वपूर्ण प्रदर्शन किया। तीनों खिलाड़ियों के सामूहिक प्रयास से भारत ने टीम स्पर्धा में रजत पदक सुनिश्चित किया। इस प्रदर्शन ने एशियाई स्तर पर भारतीय महिला गोल्फ की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को मजबूत तरीके

एक और पदक नहीं है, बल्कि यह देश में महिला खिलाड़ियों के बढ़ते आत्मनिश्चय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उनकी मजबूत उपस्थिति का संकेत भी है। विशेष रूप से प्रणवी शर्मा उर्स का व्यक्तिगत स्वर्ण और टीम स्पर्धा का रजत पदक भारतीय गोल्फ के लिए उल्लेखनीय उपलब्धि है। अदिति अशोक और दीक्षा डागर के साथ उनके सामूहिक प्रदर्शन ने युवा खिलाड़ियों के लिए भी एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कोयल मल्लिक को BJP ने बनाया राज्यसभा उम्मीदवार, बंगाल की सियासत में बढ़ी हलचल

भारतार्थ खबर Bhaarataraarth. com
संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 5 अक्टूबर 2026 ।

पश्चिम बंगाल की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ने एक महत्वपूर्ण राजनीतिक कदम उठाते हुए अभिनेत्री कोयल मल्लिक को राज्यसभा उपचुनाव के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया है। पार्टी ने उत्तराखंड से दिनेश आर्य को भी राज्यसभा चुनाव के लिए प्रत्याशी बनाया है। दोनों नामों की घोषणा के

इस्तीफा दे दिया। अब भारतीय जनता पार्टी द्वारा उन्हें पश्चिम बंगाल राज्यसभा उपचुनाव का उम्मीदवार बनाए जाने के बाद उनके राजनीतिक



कोयल मल्लिक (पश्चिम बंगाल)

दिनेश आर्य (उत्तराखंड)

लगातार तेज बनी हुई है। ऐसे में कोयल मल्लिक की उम्मीदवारी को लेकर राजनीतिक हलकों में अलग-अलग तरह के आकलन किए जा रहे हैं। कोयल मल्लिक के राजनीतिक सफर का सबसे चर्चित पहलू उनका तुणमूल कांग्रेस से जुड़ना और बाद में भाजपा की ओर से राज्यसभा उम्मीदवार बनाया जाना है। अप्रैल में राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने और जुलाई में इस्तीफा देने के बाद अब भाजपा के उम्मीदवार के रूप में उनका



बाद बंगाल की राजनीतिक गतिविधियाँ और राज्यसभा चुनाव को लेकर चर्चाएँ तेज हो गई हैं। सिनेमा से राजनीति तक कोयल मल्लिक का सफर कोयल मल्लिक बंगाली फिल्म उद्योग की चर्चित अभिनेत्रियों में शामिल रही हैं। इसी वर्ष उन्होंने सफ़र पहले उन्हें तृणमूल कांग्रेस की ओर से राज्यसभा के लिए नामित किया गया था और उन्होंने अगस्त 2026 में राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ली थी। हालाँकि, कुछ ही महीनों बाद जुलाई 2026 में उन्होंने राज्यसभा की सदस्यता से

सामने आना बंगाल की राजनीति में विषय चर्चा का विषय बन गया है। हालाँकि, उनकी उम्मीदवारी के अंतिम परिणाम का फैसला राज्यसभा उपचुनाव की राजनीतिक प्रक्रिया और मतदान के बाद ही होगा। फिलहाल भाजपा के इस निर्णय ने चुनावी समीकरणों को लेकर नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है। उत्तराखंड से दिनेश आर्य भी उम्मीदवार भारतीय जनता पार्टी ने पश्चिम बंगाल के साथ उत्तराखंड के लिए भी राज्यसभा उम्मीदवार के नाम की घोषणा की है। पार्टी ने दिनेश आर्य को उत्तराखंड से प्रत्याशी बनाया है।

SIR विरोध के बीच दिल्ली में हाई अलर्ट, इंडिया गेट-जंतर-मंतर मार्च पर पुलिस की कड़ी निगरानी

भारताथ खबर
Bhaaratath.com

संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 5 अक्टूबर 2026।

राष्ट्रीय राजधानी में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) और चुनाव आयोग से जुड़े मुद्दों को लेकर जारी विरोध प्रदर्शनों के बीच रविवार को सुख्खा व्यवस्था कड़ी रही। इंडिया गेट से जंतर-मंतर तक प्रस्तावित मार्च को देखते हुए दिल्ली पुलिस ने कई प्रमुख मार्गों पर बैरिकेडिंग की और अतिरिक्त सुरक्षाबलों की तैनाती की। प्रदर्शनकारियों की ओर से मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग भी उठाई जा रही है। विरोध का प्रमुख मुद्दा SIR प्रक्रिया को लेकर है। प्रदर्शनकारी मतदाता सूची के पुनरीक्षण की प्रक्रिया, पारदर्शिता और मतदाताओं के अधिकारों से जुड़े सवाल उठा रहे हैं। इंडिया गेट से जंतर-मंतर तक मार्च की घोषणा रविवार को इंडिया गेट से जंतर-मंतर तक मार्च निकालने की घोषणा की गई थी।

इसमें विभिन्न नागरिक और छात्र संगठनों से जुड़े लोगों के शामिल होने की बा...

सामने आई। प्रशासन की ओर से प्रस्तावित मार्च को अनुमति नहीं दिए जाने की जानकारी भी सामने आई। स्थिति को देखते हुए जंतर-मंतर और आसपास के प्रमुख मार्गों पर पुलिस ने बैरिकेड लगाए। कई स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल, पुलिस वाहन और निगरानी दल तैनात किए गए। सुख्खा व्यवस्था पर नजर रखने के लिए सीसीटीवी और ड्रोन निगरानी का भी इस्तेमाल किए जा...

की जानकारी सामने आई। बैरिकेड पार करने की कोशिश, कई लोगों हिरासत में पुलिस के दौरान कुछ स्थानों पर प्रदर्शन और प्रदर्शनकारियों के बीच तनाव की स्थिति बनी। कुछ प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड पार कर जंतर-मंतर की ओर बढ़ने का प्रयास किया, जिसके बाद पुलिस ने कानूनी तौरों से निपटारा शुरू किया।



इससे पहले भी SIR और चुनाव आयोग से जुड़े मुद्दों को लेकर विरोध प्रदर्शन हो चुके हैं। लगातार जारी विरोध के कारण राजधानी में राजनीतिक गतिविधियाँ और सुरक्षा व्यवस्था दोनों

दिल्ली में SIR विरोध के बीच हाई अलर्ट

गंगा घेरा से जंतर-मंतर तक कड़ी सुरक्षा



चर्चा के केंद्र में हैं। SIR को लेकर चुनावी पारदर्शिता पर बहस SIR को लेकर जारी विवाद ने मतदाता सूची की शुद्धता, मताधिकार और चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता को लेकर व्यापक बहस को जन्म दिया है। प्रदर्शनकारी आशंका जता रहे हैं कि पुनरीक्षण की प्रक्रिया के दौरान पात्र मतदाताओं के नाम प्रभावित हो सकते हैं और वे प्रक्रिया में शामिल नहीं हो पाएंगे।



है। वहीं, चुनाव आयोग की ओर से SIR को निर्धारित कानूनी ओर चुनावी प्रक्रिया के तहत संघालित किए जाने की बात कही गई है। ऐसे में विवाद का एक प्रमुख पहलू यह भी है कि मतदाता सूची को अधिक सटीक बनाने की प्रक्रिया और प्रत्येक पात्र नागरिक के मताधिकार की सुरक्षा के बीच संतुलन कैसे कायम रखा जाए। कानून-व्यवस्था और प्रदर्शन के अधिकार पर भी सवाल दिल्ली में रविवार की घटनाओं ने एक बार फिर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के अधिकार और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी के बीच संतुलन को लेकर चर्चा तेज कर दी है। प्रशासन के सामने एक ओर संवेदनशील क्षेत्रों में कानून-व्यवस्था बनाए रखने की चुनौती है, वहीं प्रदर्शनकारियों की ओर से अपनी मांगों लोकतांत्रिक तरीके से उठाने के अधिकार पर जोर दिया जा रहा है। SIR को लेकर जारी राजनीतिक और सामाजिक बहस आगे चलने वाली है और यह देखने की

जंतर-मंतर पर पुलिस कार्रवाई पर सियासी घमासान, महिला पत्रकारों के आरोपों से उठे गंभीर सवाल



भारतीय खबर
Bhaaraataarth.com
नई दिल्ली, 5 अक्टूबर 2026।
राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर पर 3 अक्टूबर को हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस कार्रवाई को लेकर राजनीतिक विवाद तेज हो गया है। प्रदर्शन की कवरज कर रही टीवी महिला पत्रकारों ने दिल्ली पुलिसकर्मियों पर कथित गैर उचित एक्शन और दुर्व्यवहार के गंभीर आरोप लगाए हैं। शिकायतें सामने आने के बाद दिल्ली पुलिस ने मामले की निष्पक्ष जांच के लिए इसे क्राइम ब्रांच को सौंप दिया है। मामले ऐसे समय सामने आया है, जब मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) को लेकर दिल्ली में लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं। इस पूरे

उपनाटकम ने एक साथ प्रदर्शन के अधिकार, पुलिस की जवाबदेही और पत्रकारों की स्वतंत्र रिपोर्टिंग से जुड़े सवालों को चर्चा के केंद्र में ला दिया है। महिला पत्रकारों की शिकायत से बढ़ा विवाद दिल्ली पुलिस के अनुसार 3 अक्टूबर के प्रदर्शन के दौरान तीन महिला पत्रकारों की ओर से पुलिसकर्मियों पर यौन उत्पीड़ना के आरोप लगाए गए। पुलिस ने शिकायतें प्राप्त होने की पुष्टि करते हुए इन्हें निष्पक्ष जांच के लिए क्राइम ब्रांच को भेजा है। जांच में शिकायतकर्ताओं और संबंधित लोगों के बयान दर्ज किए जाने की प्रक्रिया शामिल होगी। एक महिला पत्रकार ने आरोप लगाया कि पुलिस कार्रवाई की रिकॉर्डिंग के दौरान उनके साथ अनुचित व्यवहार किया गया। हालांकि इन आरोपों की

सत्यता का अंतिम निर्धारण जांच पूरी होने के बाद ही किया जा सकेगा। इसलिए इस स्तर पर किसी व्यक्ति या अधिकारी को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा। प्रियंका गांधी और विपक्ष ने उठाए सवाल कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्वा ने इस घटनाक्रम पर गंभीर चिंता जताते हुए पुलिस की भूमिका पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि सुझा देने वाली पुलिस के सामने यदि महिलाएं स्वयं असुरक्षित महसूस करें तो यह गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने केंद्र सरकार और गृह मंत्रालय से मामले का संज्ञान लेने की मांग की। कांग्रेस के अन्य नेताओं ने भी शिकायतों पर कार्रवाई और प्राथमिकी दर्ज किए जाने की मांग उठाई। विपक्ष का तर्क है कि यदि पुलिसकर्मियों पर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार के आरोप हैं, तो शिकायतों की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करना प्रशासन की जिम्मेदारी है। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने भी महिला प्रदर्शनकारियों और पत्रकारों के साथ कथित पुलिस हिंसा पर आपत्ति जताते हुए इस गंभीर और शर्मनाक बताया। उनके बयान ने राजनीतिक बहस को और तीखा कर दिया है। AAP ने भी प्रदर्शन किया मामले को लेकर आम आदमी

पार्टी ने भी दिल्ली पुलिस के खिलाफ आवाज उठाई। पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भाद्रद्वaj और कार्यकर्ताओं ने संसद मार्ग पुलिस थाने के बाहर प्रदर्शन करते हुए शिकायतों पर प्राथमिकी दर्ज करने और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। विपक्षी दलों का कहना है कि महिला पत्रकारों और प्रदर्शनकारियों की शिकायतों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए तथा जांच ऐसी एजेंसी से होनी चाहिए जिससे शिकायतकर्ताओं को निष्पक्षता का भरोसा मिल सके। प्रदर्शन और पुलिस कार्रवाई की पृष्ठभूमि जंतर-मंतर पर प्रदर्शन मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और SIR से जुड़े राजनीतिक विरोध के बीच हो रहा है। 3 अक्टूबर को प्रदर्शनकारियों के जंतर-मंतर की ओर बढ़ने के प्रयास के दौरान पुलिस ने करीब 150 लोगों को हिरासत में लिया था। इससे पहले भी इस मुद्दे पर प्रदर्शन और पुलिस कार्रवाई को लेकर तनाव की स्थिति बनी थी। इसी दौरान दिल्ली पुलिस ने कुछ प्रदर्शनकारियों के खिलाफ प्राथमिकी भी दर्ज की थी। पुलिस का पक्ष सार्वजनिक व्यवस्था और लागू प्रतिक्रिया के पालन से जुड़ है, जबकि प्रदर्शनकारी

इसे अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के इस्तेमाल से जोड़ रहे हैं। पत्रकारों की स्वतंत्रता का सवाल इस पूरे विवाद का एक महत्वपूर्ण पहलू पत्रकारों की सुरक्षा और स्वतंत्र रिपोर्टिंग से भी जुड़ा है। प्रदर्शन स्थल पर पत्रकारों का काम घटनाओं को रिकॉर्ड करना और जनता तक तथ्य पहुंचाना है। यदि किसी पत्रकार को पुलिस कार्रवाई के दौरान अनुचित व्यवहार का सामना करना पड़ता है तो इसकी निष्पक्ष जांच जरूरी है। प्रेस क्लब ऑफ इंडिया ने भी जंतर-मंतर की घटना पर चिंता जताते हुए कहा है कि पत्रकारों को बिना भय या दबाव के अपना काम करने दिया जाना चाहिए। हालांकि, किसी भी घटना की रिपोर्टिंग करते समय पत्रकारों के लिए भी तथ्य और आरोप के बीच अंतर स्पष्ट रखना जरूरी है। आरोप नीय हैं तो उनकी गंभीरता के अनुरूप निष्पक्ष जांच भी उतनी ही आवश्यक है। निष्पक्ष जांच से ही निकलेगा रास्ता मौजूदा विवाद में सबसे महत्वपूर्ण कदम अब निष्पक्ष जांच है। शिकायतकर्ताओं के बयान, उपलब्ध वीडियो फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों की जानकारी और पुलिसकर्मियों की भूमिका की स्वतंत्र रूप से जांच की जानी चाहिए।

एशियन गेम्स 2026 में भारत का शानदार अभियान समाप्त, 85 पदकों के साथ चौथे स्थान पर रहा भारत

भारताथ खबर
Bhaaratath.com

संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 5 अक्टूबर 2026 ।

जापान के आइची-नागोया में आयोजित एशियन गेम्स 2026 में भारतीय खिलाड़ियों ने कई शानदार और ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ अपने अभियान का समापन किया। भारत ने प्रतिযোগिता में कुल 85 पदक जीते, जिनमें 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदक शामिल रहे। पदक तालिका में भारत चौथे स्थान पर रहा। हालांकि भारत का कुल पदक आंकड़ा 2023 के हांगझोउ एशियन गेम्स के 106 पदकों से कम रहा, लेकिन 2026 के खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने कई स्पर्धाओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए देश की बढ़ती खेल क्षमता का परिचय दिया।

हॉकी में लगातार दूसरी बार स्वर्ण भारतीय पुरुष हॉकी टीम का प्रदर्शन इस अभियान की प्रमुख उपलब्धियों में रहा। फाइनल मुकाबले में भारत ने मलेशिया को

नाम किया। कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने दो गोल किए, जबकि जुगराज, हार्दिक और शिलानंद ने भी गोल कर

एशियन गेम्स 2026 भारत का शानदार ओपनर
85 पदकों के साथ चौथे स्थान पर रहा।

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
चीन	21	27	37	85
जापान	21	27	37	85
भारत	21	27	37	85
मलेशिया	21	27	37	85

टीम की जीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस जीत के साथ भारत ने एशियन गेम्स में पुरुष हॉकी का खिताब लगातार दूसरी बार अपने नाम किया। इस उपलब्धि ने भारतीय हॉकी को एक बार फिर एशियाई स्तर पर मजबूती से स्थापित किया और लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक के लिए सफाई क्वालिफिकेशन का रास्ता भी साधने में मदद किया। क्रिकेट में पाकिस्तान को

टीम ने भी एशियन गेम्स में शानदार प्रदर्शन किया। टी-20 फाइनल में भारत ने पाकिस्तान को 19 रन से हराकर स्वर्ण पदक जीता। भारत की इस जीत ने क्रिकेट में उसके दबदब को बरकरार रखा। भारत-पाकिस्तान के बीच हुआ यह मुकाबला प्रतियोगिता के सबसे चर्चित मुकाबलों में रहा। भारतीय टीम के स्वर्ण पदक ने देश के पदक अभियान को महत्वपूर्ण मजबूती दी। गोल्फ में प्रणवी उर्स ने रचा इतिहास। गोल्फ में प्रणवी उर्स ने महिला व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। वह एशियन गेम्स में महिला व्यक्तिगत गोल्फ का स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। महिला टीम स्पर्धा में अदिति अशोक, प्रणवी उर्स और दीक्षा डागर ने रजत पदक हासिल किया। गोल्फ में इन

की बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का रेखांकित किया। कुश्ती में अमन सहरावत का स्वर्ण कुश्ती में अमन सहरावत ने पुरुषों के 57 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर भारत का गोर्ख बढ्वाया। फाइनल में उन्होंने उत्तर कोरिया के चोंग सोंग हान को 11—7 से हराया। महिला कुश्ती में अंतिम पंथाल ने 53 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक हासिल किया, जबकि दीपक पुनिया ने पुरुषों के 97 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक अर्जित नाम किया। तीरंदाजी में भारतीय खिलाड़ियों का दमदार प्रदर्शन तीरंदाजी में भी भारतीय खिलाड़ियों ने प्रभावशाली प्रदर्शन किया। कुमकुम अनिल मोहोद ने महिला व्यक्तिगत रिकर्व स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल किया। भारतीय तीरंदाजी ने विभिन्न स्पर्धाओं में पदक जीतकर इस खेल में देश की मजबूत स्थिति को कायम रखा। महिला रिकर्व टीम के प्रदर्शन ने भी भारतीय अभियान को महत्वपूर्ण सफलता दिलाई। तीरंदाजी में मिली उपलब्धियाँ आने वाले अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए सकारात्मक संकेत



सम्पादकीय

महंगाई बनाम विकास:RBI के सामने ब्याज दर का कठिन फैसला

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com भारतीय अर्थव्यवस्था इस समय एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां विकास की रफ्तार को बनाए रखना और महंगाई पर नियंत्रण रखनाकृदोनों लक्ष्य एक साथ साधना आसान नहीं है। एक ओर अप्रैल–जून 2026 तिमाही में देश की अर्थव्यवस्था ने 7.8 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की है, वहीं दूसरी ओर खाद्य, ऊर्जा और वैश्विक परिस्थितियों से जुड़े महंगाई के जोखिम फिर उभरते दिखाई दे रहे हैं। ऐसे समय में भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति यानी उच्च की अक्टूबर बैठक का महत्व बढ़



गया है। समिति की बैठक 5 से 7 अक्टूबर तक होनी है और 7 अक्टूबर को नीतिगत निर्णय घोषित किया जाएगा। बाजार में रेपो दर में 25 आधार अंक की वृद्धि की संभावना पर चर्चा है, हालांकि अंतिम फैसला महंगाई, आर्थिक गतिविधियों, वैश्विक परिस्थितियों और आगे के जोखिमों के व्यापक आकलन पर निर्भर करेगा। विकास मजबूत, लेकिन महंगाई का सवाल गंभीर भारतीय अर्थव्यवस्था की मौजूदा तस्वीर पूरी तरह कमजोर नहीं करती है और उसी समय खाद्य पदार्थों, ईंधन तथा अन्य लागतों के दाम बढ़ते हैं, तो महंगाई का दबाव व्यापक हो सकता है। अगरस्त में खुदरा महंगाई 4.82 प्रतिशत तक पहुंचने की रिपोर्ट सामने आई, जो RBI के 4 प्रतिशत के मध्यम अवधि लक्ष्य से ऊपर है। RBI ने अगरस्त की मौद्रिक नीति में 2026–27 के लिए CPI महंगाई का अनुमान 5 प्रतिशत रखा था। उस समय भी केंद्रीय बैंक ने खाद्य और ईंधन कीमतों से पैदा होने वाले संभावित दूसरे दौर के प्रभावों को जोखिम के रूप में रेखांकित किया था। रेपो दर में वृद्धि का मूल उद्देश्य अर्थव्यवस्था में अत्यधिक मांग और महंगाई की उम्मीदों को नियंत्रित करना होता है। ब्याज दर बढ़ने से बैंकों की ऋण लागत प्रभावित होती है और उसका असर धीरे-धीरे गृह ऋण, वाहन ऋण, व्यक्तिगत ऋण तथा कारोबार के कर्ज पर दिखाई दे सकता है। यहीं से RBI के सामने कठिन संतुलन का शुरुआत होती है। यदि महंगाई लगातार लक्ष्य से ऊपर रहती है और केंद्रीय बैंक कार्रवाई नहीं करता, तो महंगाई की उम्मीदें मजबूत हो सकती हैं। इससे रुपये, निवेश और घरेलू बचत पर भी दबाव पड़ सकता है। लेकिन यदि महंगाई को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरें बहुत तेजी से बढ़ाई जाती हैं, तो इसका दूसरा प्रभाव आर्थिक गतिविधियों पर पड़ सकता है। महंगे ऋण से घर खरीदने वाले परिवारों की EMI बढ़ सकती है, छोटे और मध्यम कारोबारियों की वित्तीय लागत बढ़ सकती है तथा निजी निवेश के फैसले टल सकते हैं। अंततः इसका असर रोजगार सृजन और उपभोक्ता मांग पर भी पड़ सकता है। महंगाई केवल ब्याज दर से नहीं रुकती इस बहस का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि हर प्रकार की महंगाई का समाधान ब्याज दर बढ़ाना नहीं है। यदि कीमतों में वृद्धि का कारण कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमत, भू–राजनीतिक तनाव, आपूर्ति बाधा या खाद्य उत्पादन में कमी है, तो केवल ब्याज दर बढ़ाकर उस समस्या का स्थायी समाधान नहीं किया जा सकता। ऐसे मामलों में सरकार और RBI के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है। खाद्य आपूर्ति बढ़ाने, भंडारण व्यवस्था मजबूत करने, आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता बनाए रखने, आयात–निर्यात नीति में समय पर बदलाव और ऊर्जा कीमतों के प्रभाव को नियंत्रित करने जैसे कदम मौद्रिक नीति के साथ मिलकर काम कर सकते हैं। आम आदमी और छोटे कारोबार की कीमत पर स्थिरता नहीं मौद्रिक नीति की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि महंगाई कितने प्रतिशत रही। यह भी देखना होगा कि कीमतों और ब्याज दरों के फैसलों का वास्तविक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा।

El Niño और भारत:मौसम की चेतावनी को खाद्य सुरक्षा की रणनीति में बदलना होगा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com दक्षिण–पश्चिम मानसून 2026 का कमजोर प्रदर्शन भारत के लिए केवल मौसम संबंधी आंकड़ा नहीं, बल्कि कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जल प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा के लिए एक गंभीर चेतावनी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार जून से सितंबर के बीच देश में सामान्य से 12.6 प्रतिशत कम वर्षा हुई और कुल वर्षा करीब 759.4 मिलीमीटर रही, जबकि दीर्घकालिक औसत लगभग 868.6 मिलीमीटर है। यह 2001 के बाद सबसे कमजोर मानसूनों में शामिल रहा। इस स्थिति के बीच म्स Niño का प्रभाव भी चिंता बढ़ा रहा है। मौसम विज्ञान की दृष्टि से म्स छप्पव कोई नया घटनाक्रम नहीं है, लेकिन भारत जैसे कृषि और मानसून पर बड़ी निर्भरता वाले देश के लिए इसके प्रभावों को समय रहते समझना और उनसे निपटने की तैयारी करना अत्यंत आवश्यक है। अब चुनौती केवल यह जानना नहीं है कि बारिश कम होगी या ज्यादा; असली चुनौती यह है कि मौसम संबंधी चेतावनी को खाद्य और जल सुरक्षा की ठोस नीति में कैसे बदला जाए। कमजोर मानसून का अर्थ केवल कम बारिश नहीं भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मानसून की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्षा की कमी सीधे खेती को प्रभावित करती है और इसका असर बीज, उर्वरक, सिंचाई, पशुपालन, ग्रामीण रोजगार तथा किसानों की आय तक पहुंचता है। 2026 के कमजोर मानसून का

प्रभाव पहले से ही ग्रामीण मांग पर दिखाई देने लगा है। रिपोर््टों के अनुसार कमजोर और असमान बारिश के कारण कृषि गतिविधियों और ग्रामीण आय पर दबाव पड़ा है, जिसका असर ट्रैक्टर तथा दोपहिया वाहनों जैसी ग्रामीण मांग से जुड़ी खरीद पर भी पड़ा। यही कारण है कि मानसून के आंकड़े को केवल मौसम विभाग की रिपोर्ट मानकर छोड़ देना दूरदर्शिता नहीं होगी। इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को भी समान गंभीरता से देखना होगा। El Niño को लेकर घबराहट नहीं, तैयारी जरूरी El Niño के मजबूत होने की संभावना निश्चित रूप से चिंता का विषय है, लेकिन इसे तत्काल संकट की घोषणा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। मौसम प्रणालियां जटिल होती हैं और किसी एक जलवायु घटना का प्रभाव पूरे देश में समान नहीं होता। वर्षा में क्षेत्रीय अंतर भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए नीति–निर्माताओं को राष्ट्रीय औसत के साथ–साथ राज्य, जिला और यहां तक कि ब्लॉक स्तर के आंकड़ों पर ध्यान देना होगा। कहीं अत्यधिक बारिश हो सकती है तो कहीं सूखे जैसी स्थिति। यही बदलता मौसम भारत के लिए जल प्रबंधन की नई चुनौती है। किसान को की कमी सीधे खेती को प्रभावित करती है और इसका असर बीज, उर्वरक, तभी उपयोगी है, जब वह किसान तक सही समय पर और समझने योग्य भाषा में पहुंचे। किसान को

केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि अगले सप्ताह बारिश होगी या नहीं। उसे यह भी बताया जाना चाहिए कि ऐसी स्थिति में कौन–सी फसल लगानी है, सिंचाई कब करनी है, कितनी मात्रा में पानी बचाना है और फसल को संभावित नुकसान से कैसे बचाना है। जिला स्तर पर कृषि



विभाग, मौसम विभाग, कृषि विश्वविद्यालयों और स्थानीय प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता है। मोबाइल संदेश, स्थानीय भाषा में मौसम सलाह और गांव स्तर तक कृषि परामर्श की व्यवस्था को और मजबूत किया जाना चाहिए। जल संरक्षण अब विकल्प नहीं कम बारिश के वर्षों में जलाशयों, भूजल और स्थानीय जलस्रोतों की वास्तविक स्थिति सामने आती है, वहां यदि वर्षा जल का पर्याप्त संचयन नहीं हुआ तो कमजोर मानसून का असर अगले मौसम तक बना रह

सकता है तालाबों, झीलों और पारंपरिक जलस्रोतों का संरक्षण केवल पर्यावरणीय अभियान नहीं, बल्कि कृषि और खाद्य सुरक्षा की नीति का हिस्सा होना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में खेत–तालाब, छोटे जलाशय, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण जैसी व्यवस्थाओं को स्थानीय जरूरत के अनुसार बढ़ावा देना होगा। शहरों के लिए भी यही संदेश है। बारिश कम होने पर जल संकट और बारिश अधिक होने पर शहरी बाढ़कृदोनों समस्याओं का मूल समाधान बेहतर जल प्रबंधन में छिपा है। फसल विविधीकरण पर गंभीरता से काम जरूरी कम पानी वाली फसलों को बढ़ावा देना भी दीर्घकालिक रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई सीमित है, वहां स्थानीय जलवायु के अनुकूल फसल पैटर्न विकसित करने की आवश्यकता है। किसानों को केवल पारंपरिक

फसल चक्र पर निर्भर रखने के बजाय कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के आधार पर दालों, मोटे अनाज और अन्य अपेक्षाकृत कम पानी वाली फसलों के विकल्प उपलब्ध कराने चाहिए। लेकिन फसल विविधीकरण केवल सरकारी आदेश से संभव नहीं होगा। इसके लिए बाजार, न्यूनतम समर्थन मूल्य, प्रसंस्करण, भंडारण और खरीद व्यवस्था भी मजबूत करनी होगी। खाद्य कीमतों पर नजर रखना भी जरूरी कम बारिश का असर उत्पादन पर पड़ा तो खाद्य वस्तुओं की कीमतों पर दबाव बढ़ सकता है। इसलिए सरकार को संभावित कमी वाले कृषि उत्पादों की पहचान पहले से करनी होगी। पर्याप्त बफर स्टॉक, समय पर बाजार हस्तक्षेप और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति व्यवस्था को मजबूत रखना होगा। खाद्य सुरक्षा का अर्थ केवल सरकारी गोदामों में अनाज का पर्याप्त भंडार होना नहीं है। इसका अर्थ यह भी है कि किसान उत्पादन कर सके, उपभोक्ता उचित कीमत पर भोजन खरीद सके और कमजोर वर्गों तक आवश्यक खाद्य सामग्री नियमित रूप से पहुंचती रहे। संपादकीय दृष्टि भारत के लिए 2026 का मानसून एक महत्वपूर्ण नीति–संदेश लेकर आया है। मौसम की अनिश्चितता अब असाधारण घटना नहीं रह गई है। कभी कम बारिश, कभी अत्यधिक वर्षा, कभी लंबे शुष्क अंतराल और कभी अचानक भारी बारिशकृइन बदलते पैटर्न के बीच कृषि नीति को भी अधिक लचीला बनाना होगा। सबसे

महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकार की तैयारी केवल आपदा आने के बाद राहत देने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। पूर्व चेतावनी, पूर्व तैयारी और स्थानीय स्तर पर त्वरित कार्रवाई की नीति का आधार बनाना होगा। मौसम विभाग को बेहतर पूर्वानुमान प्रणाली, कृषि विभाग को स्थानीय सलाह, प्रशासन को जल प्रबंधन और किसानों को समय पर संसाधनकृइन चारों कड़ियों को एक साथ मजबूत करना होगा। निष्कर्षक बारिश का इंतजार नहीं, भविष्य की तैयारी जरूरी कमजोर मानसून और El Niño भारत के सामने एक चेतावनी हैं, लेकिन इन्हें केवल संकट के रूप में देखने की जरूरत नहीं है। सही नीति और बेहतर तैयारी के जरिए इन्हें कृषि सुधार और जल प्रबंधन की दिशा बदलने के अवसर में बदला जा सकता है। अब समय है कि बारिश के आंकड़ों पर प्रतिक्रिया देने के बजाय मौसम के बदलते स्वरूप को अनुरूप कृषि और खाद्य सुरक्षा की दीर्घकालिक रणनीति तैयार की जाए। भारत की खाद्य सुरक्षा केवल खेत में पैदा होने वाले अनाज से तय नहीं होगी। यह पानी की हर बूंद, किसान की हर मेहनत, वैज्ञानिक की हर चेतावनी और सरकार की हर समयबद्ध कार्रवाई से तय होगी। मौसम का पूर्वानुमान नहीं खतरे की सूचना देता है, दूरदर्शी नीति उस खतरों को संकट बनने से रोकती है। यही El Niño और कमजोर मानसून से भारत को मिलने वाला सबसे महत्वपूर्ण सबक है।

व्यवस्था पर ध्यान देना होगा

एशियन गेम्स के 85 पदक:भारत को पदक से आगे खेल

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com एशियन गेम्स 2026 में भारत का अभियान 85 पदकों के साथ समाप्त हुआ। 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदकों के साथ भारत 37 तालिका में चौथे स्थान पर रहा। यह उपलब्धि निश्चित रूप से भारतीय खेल जगत के लिए गर्व का विषय है। खासकर तब, जब भारतीय खिलाड़ियों ने हॉकी, क्रिकेट, कबड्डी, तीरंदाजी, मुक्केबाजी, कुश्ती, गोल्फ और शूटिंग जैसे अनेक खेलों में अपनी क्षमता का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। लेकिन किसी भी बड़ी खेल प्रतियोगिता का मूल्यंकन केवल पदकों की संख्या से नहीं होना चाहिए। पदक जीतने के बाद सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि इस सफलता को स्थायी और लगातार बेहतर प्रदर्शन में कैसे बदला जाए। एशियन गेम्स 2026 भारत को इसी दिशा में आत्ममंथन का अवसर देता है। उपलब्धि बड़ी है, लेकिन लक्ष्य उससे भी बड़ा होना चाहिए भारत ने 2023 के हांगझोउ एशियन गेम्स में



स्थान हासिल कर लिया और अभियान सफल रहा। चौथा स्थान महत्वपूर्ण है, लेकिन पदक संख्या में कमी यह संकेत भी देती है कि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां निरंतरता और तैयारी को और मजबूत करने की आवश्यकता है। दूसरी ओर, 2026 के अभियान को निराशाजनक बताना भी उचित नहीं होगा। भारतीय दल ने कई ऐतिहासिक उपलब्धियां दर्ज कीं। महिला गोल्फ उससे भी बड़ा होना चाहिए भारत ने 2023 के हांगझोउ एशियन गेम्स में

सफलता, मुक्केबाजी में स्वर्ण पदक, कुश्ती में अमन सहरावत की उपलब्धि और हॉकी में पुरुष टीम का स्वर्ण भारत की बदलती खेल तस्वीर को सामने रखते हैं। टीम खेलों ने दिखाई नई ताकत इस बार भारतीय खेल अभियान की एक महत्वपूर्ण विशेषता टीम खेलों में मिली सफलता रही। क्रिकेट और कबड्डी में पुष्प तथा महिला वर्गों में स्वर्ण पदक और हॉकी में पुष्प टीम की सफलता ने यह दिखाया कि भारत टीम खेलों में भी अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है। पुरुष हॉकी टीम ने खिताब बरकरार रखा और लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक के लिए स्थान भी सुनिश्चित किया। यह बदलाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि लंबे समय तक भारत का एशियाई खेलों में पदक अभियान कुछ चुनिंदा व्यक्तिगत खेलों पर अधिक निर्भर माना जाता रहा है। में प्रणवी उर्स का स्वर्ण, तीरंदाजी में कुमकुम मोहोद की ऐतिहासिक

चुनौती जमीनी स्तर पर है फिर भी भारतीय खेल व्यवस्था के सामने सबसे बड़ा प्रश्न प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि प्रतिका को लंबे समय तक तैयार करने की व्यवस्था है। देश के छोटे शहरों कस्बों और गांवों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। चुनौती यह है कि उन प्रतिभाओं की पहचान समय रहते हो, उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए योग्य कोच मिलें और उन्हें आधुनिक खेल सुविधाएं उपलब्ध हों। एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने के लिए केवल मैदान या स्टेडियम पर्याप्त नहीं है। उसे खेल विज्ञान, पोषण, फिजियोथेरेपी, मानसिक प्रशिक्षण, आधुनिक उपकरण और अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रतिस्पर्धी अनुभव की भी आवश्यकता होती है। यदि इनमें से किसी एक कड़ी में कमजोरी रहती है तो प्रतिभा का पूरा लाभ नहीं मिल पाता। शूटिंग और एथलेटिक्स से मिली सीख इस एशियन गेम्स में भारत के पारंपरिक मजबूत क्षेत्रों में भी मिश्रित परिणाम सामने आए। शूटिंग, जिसने पिछले एशियन

गेम्स में भारत को बड़ी संख्या में पदक दिलाए थे, इस बार अपेक्षित स्तर की सफलता नहीं देहारा सकी। एथलेटिक्स में भी पदकों की संख्या महत्वपूर्ण रही, लेकिन स्वर्ण पदकों के स्तर पर सुधार की आवश्यकता स्पष्ट दिखाई दी। यही वह क्षेत्र है जहां खेल प्रशासन को आंकड़ों का गंभीर विश्लेषण करना चाहिए। कौन–से खिलाड़ी दबाव में पिछड़े? किन स्पर्धाओं में मामूली अंतर से पदक छूटा? क्या प्रशिक्षण चक्र सही था? क्या चोट प्रबंधन पर्याप्त था? क्या अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का अनुभव पर्याप्त मिला? इन सवालों के जवाब भविष्य की रणनीति तय करने में महत्वपूर्ण होंगे। पदक तालिका से आगे 2036 की तैयारी भारत अब केवल एशियाई खेलों में सम्मानजनक स्थान हासिल करने तक सीमित नहीं रह सकता। देश की खेल महत्वाकांक्षएं ओलंपिक स्तर पर भी ऊंची हैं। ऐसे में 2026 के एशियन गेम्स को 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक और उससे आगे की तैयारी के एक पड़ाव के रूप में देखना चाहिए।

इसके लिए खेल नीति में निरंतरता जरूरी है। योजनाएं केवल प्रतियोगिता के कुछ महीने पहले तेज करने के बजाय वर्षों पहले शुरू होनी चाहिए। प्रतिभा पहचान से लेकर अंतरराष्ट्रीय पदक तक खिलाड़ी के पूरे सफर की जिम्मेदारी स्पष्ट होनी चाहिए। संपादकीय दृष्टि भारत के 85 पदक उपलब्धि हैं, लेकिन इन्हें अंतिम लक्ष्य मान लेना सबसे बड़ी भूल होगी। पदक किसी व्यवस्था का परिणाम होते हैं, वे स्वयं व्यवस्था नहीं होते। यदि भारत को आने वाले वर्षों में एशिया और विश्व की शीर्ष खेल शक्तियों के बीच स्थायी स्थान बनाना है तो उसे पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के साथ–साथ पदक तैयार करने वाली व्यवस्था पर भी निवेश करना होगा। खेल सुविधाओंका विस्तार, प्रशिक्षकों की गुणवत्ता, खेल विज्ञान का उपयोग, ग्रामीण और छोटे शहरों की प्रतिभाओं को अवसर, महिला खिलाड़ियों के लिए सुरक्षित एवं बेहतर प्रशिक्षण वातावरण तथा खिलाड़ियों की मानसिक और शारीरिक तैयारीकृइन सभी को एकीकृ त व्यवस्था का हिस्सा बनाना होगा।

लोकोत्तंत्र में विरोध की आवाज:कानून-व्यवस्था और प्रदर्शन के अधिकार के बीच संतुलन

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com लोकोत्तंत्र केवल चुनाव कराने की व्यवस्था का काम नहीं है। लोकोत्तंत्र की असली मजबूती इस बात से भी तय होती है कि सत्ता से असहमति रखने वाले नागरिक अपनी बात कितनी स्वतंत्रता, शांति और गरिमा के साथ रख सकते हैं। इसी कसौटी पर दिल्ली में विशेष गहन पुनरीक्षण यानी SIR और मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ चल रहे प्रदर्शनों ने एक महत्वपूर्ण संवैधानिक सवाल खड़ा किया हैकृ लोकोत्तंत्र में असहमति की सीमा कहां समाप्त होती है और कानून–व्यवस्था की जिम्मेदारी कहां से शुरू होती है? दिल्ली में पिछले कुछ दिनों से चुनावी प्रक्रिया और मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ प्रदर्शन तेज हुए हैं। 3 और 4 अक्टूबर को जंतर–मंतर तथा राजधानी के अन्य हिस्सों में प्रदर्शनकारियों की हिरासत की खबरें सामने आईं। पुलिस और प्रशासन की ओर से सार्वजनिक व्यवस्था तथा निर्धारित प्रतिबंधों के पालन का तर्क दिया गया, जबकि प्रदर्शनकारियों की ओर से लोकोत्तांत्रिक विरोध के अधिकार के संरक्षण की मांग उठी। यही वह बिंदु है जहां लोकोत्तंत्र की परिपक्वता की परीक्षा होती है। विरोध का अधिकार के लोकोत्तंत्र की कमजोरी नहीं भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)के तहत



व्यवस्था, सुरक्षा और अन्य संवैधानिक हितों को ध्यान में रखते हुए कानून के अनुसार उचित प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने भी स्पष्ट किया है कि शांतिपूर्ण विरोध लोकोत्तांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। साथ ही सार्वजनिक स्थानों, यातायात और दूसरे नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए उचित नियमन किया जा सकता है। अर्थात

लोकोत्तांत्रिक व्यवस्था का सिद्धांत यह नहीं कहता कि हर प्रदर्शन को हर बिना हथियार एकत्र होने का अधिकार अनुमति दी जाए। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण हैकृ किसी सरकार, चुनावी संस्था या प्रशासन के खिलाफ असहमति को मात्र असहमति होने के कारण कानून–व्यवस्था का संकट नहीं माना जा सकता। SIR पर सवाल हैं तो जवाब भी जरूरी हैं SIR को लेकर राजनीतिक दलों और नागरिक समूहों के बीच मतभेद सामने आए हैं। प्रदर्शनकारी मतदाता सूची में संभावित नाम हटने और पात्र मतदाताओं के

अधिकार प्रभावित होने को लेकर सवाल उठा रहे हैं। दूसरी ओर चुनाव आयोग का पक्ष है कि मतदाता सूची का पुनरीक्षण पात्रता सुनिश्चित करने तथा गलत, दोहराए गए या अयोग्य अधिकार प्रभावित होने को लेकर सवाल उठा रहे हैं। दूसरी ओर चुनाव आयोग का पक्ष है कि मतदाता सूची का पुनरीक्षण पात्रता सुनिश्चित करने तथा गलत, दोहराए गए या अयोग्य

और समयबद्ध शिकायत व्यवस्था मिलनी चाहिए। राजनीतिक दलों को भी अपने आरोपों को प्रमाण और तथ्य के साथ सामने रखना चाहिए। चुनाव आयोग को भी प्रक्रिया, दस्तावेज और आपत्तियों के निवारण की व्यवस्था को अधिकतम पारदर्शी बनाना चाहिए। क्योंकि मतदाता सूची केवल प्रशासनिक दस्तावेज नहीं है। यह नागरिक के लोकोत्तांत्रिक अधिकार से सीधे जुड़ी हुई है। प्रशासन का दायित्व भी कम महत्वपूर्ण नहीं लोकोत्तंत्र में प्रदर्शनकारियों के अधिकारों की रक्षा जितनी आवश्यक है, उतना ही आवश्यक प्रशासन का दायित्व भी है। राजधानी जैसे संवेदनशील शहर में सड़कें, सार्वजनिक परिवहन, अस्पताल, कार्यालय और सामान्य नागरिकों की आवाजाही प्रभावित होने पर प्रशासन को हस्तक्षेप करना पड़ सकता है। लेकिन हस्तक्षेप की प्रकृति महत्वपूर्ण है। यदि कोई प्रदर्शन शांतिपूर्ण है तो बातचीत, निर्धारित स्थान, समय–सीमा और यातायात प्रबंधन जैसे उपाय प्राथमिक होने चाहिए। यदि कोई व्यक्ति हिंसा करता है, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाता है, पुलिस पर हमला करता है या गंभीर रूप से दूसरों के अधिकारों में बाधा डालता है, तो कानून के तहत कार्रवाई आवश्यक हो जाती है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन और हिंसक

गतिविधि को एक ही श्रेणी में रखना लोकोत्तांत्रिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। हिरासत अंतिम उपाय क्यों हो? हालिया प्रदर्शनों में बड़ी संख्या में लोगों को हिरासत में लिए जाने की खबरों ने इसी प्रश्न को फिर सामने ला दिया है। हिरासत या गिरफ्तारी किसी भी स्थिति में प्रशासन के लिए सुविधाजनक पहला विकल्प नहीं होना चाहिए। कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए कार्रवाई आवश्यक हो सकती है, लेकिन उसका आधार स्पष्ट, कानूनी और परिस्थिति के अनुपात में होना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय ने जुलाई 2026 में एक अन्य विरोध प्रदर्शन से जुड़े मामले में कहा था कि केवल इसलिए पुलिस बल का अत्यधिक इस्तेमाल उचित नहीं हो सकता कि कोई आंदोलन या प्रदर्शन हो रहा है। न्यायालय ने शांतिपूर्ण विरोध और सार्वजनिक व्यवस्था के बीच संतुलन के लिए देशव्यापी प्रोटोकॉल की आवश्यकता पर भी जोर दिया। यह टिप्पणी मौजूदा परिस्थितियों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। समाधान टकराव में नहीं, स्पष्ट नियमों में भारत को अब विरोध प्रदर्शनों के लिए अधिक स्पष्ट और पारदर्शी व्यवस्था की आवश्यकता है। निर्धारित प्रदर्शन स्थलों की पर्याप्त व्यवस्था हो, अनुमति की प्रक्रिया सरल हो, समय और मार्ग पहले से स्पष्ट

किए जाएं तथा पुलिस और आयोजकों के बीच संवाद की संस्थागत व्यवस्था हो। इसके साथ यह भी सुनिश्चित होना चाहिए कि प्रशासनिक प्रतिबंध में लोगों को हिरासत से दबाने का प्रयास न बने। दूसरी ओर प्रदर्शन आयोजित करने वाले राजनीतिक दलों और संगठनों को भी अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करनी होगी। भीड़ को नियंत्रित करना, हिंसा रोकना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और पुलिस के साथ समन्वय करना आयोजकों की लोकोत्तांत्रिक जिम्मेदारी का हिस्सा होना चाहिए। संपादकीय से असहमति लोकोत्तंत्र विरोधी गतिविधि नहीं है। उसी प्रकार प्रशासन द्वारा कानून–व्यवस्था बनाए रखने के प्रयास को स्वतः लोकोत्तंत्र विरोधी कहना भी उचित नहीं होगा। जहां शांतिपूर्ण प्रदर्शन हो, वहां संवाद और नियमन प्राथमिक उपाय होने चाहिए। जहां वास्तविक हिंसा या गंभीर अव्यवस्था हो, वहां कानून का निष्पक्ष और अनुपातिक प्रयोग होना चाहिए। किसी भी पक्ष को कानून से ऊपर नहीं रखा जा सकता। विशेष रूप से चुनाव और मतदाता सूची से

जुड़े मामलों में संवेदनशीलता और बड़ जाती है। चुनावी संस्थाओं में जनता का विश्वास केवल निष्ठाओं से नहीं, बल्कि पारदर्शिता, जवाबदेही और संवाद से मजबूत होता है। निष्कर्ष लोकोत्तंत्र की खूबसूरती इस बात में है कि उसमें सरकार के समर्थनों की आवाज के साथ विरोध की आवाज के लिए भी जगह होती है। असहमति लोकोत्तंत्र की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। लेकिन विरोध का अधिकार जिम्मेदारी से जुड़ा है और कानून–व्यवस्था की शक्ति भी संवैधानिक मर्यादा से बंधी है। यही दोनों पक्षों के बीच संतुलन का आधार होना चाहिए। दिल्ली की मौजूदा स्थिति से एक स्पष्ट संदेश निकलता हैकृप्रतिबंध और टकराव लोकोत्तांत्रिक असहमति का स्थायी समाधान नहीं हो सकते। संवाद, स्पष्ट नियम, निर्धारित प्रदर्शन स्थल, पारदर्शी प्रशासन और अनुपातिक पुलिस कार्रवाई ही बेहतर रास्ता है। एक परिपक्व लोकोत्तंत्र में नागरिकों को विरोध करने का अधिकार मिले, प्रशासन को व्यवस्था बनाए रखने का अधिकार मिले और दोनों के अधिकार संविधान की सीमा में रहें। लोकोत्तंत्र की असली ताकत विरोध की आवाज को शंत करने में नहीं, बल्कि उसे सुनने और असहमति को संवैधानिक संवाद में बदलने में है।

ज्ञान से पहले श्रद्धा या श्रद्धा से पहले ज्ञान? सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान का गूढ़ संबंध



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
 बेंगलुरु, 5 अक्टूबर 2026। जैन दर्शन में मोक्षमार्ग की आधारभूत अवधारणाओं सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्रिक के पारस्परिक संबंध को लेकर सदियों से गहन चिंतन होता रहा है। इसी महत्वपूर्ण दार्शनिक प्रश्न पर निर्याधक श्रमण श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने प्रवचन के दौरान सरल एवं तर्कपूर्ण ढंग से प्रकाश डालते हुए कहा कि केवल शास्त्रों की जानकारी प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। जब सत्य

के प्रति अंतरात्मा में दृढ़ और निर्मल श्रद्धा का जागरण होता है, तभी ज्ञान जीवन को सही दिशा देने वाला बनता है। आचार्य उमास्वामी के प्रसिद्ध सूत्र मोक्षमार्गः‘कृतं सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र को मोक्षमार्ग का आधार बताया गया है। मुनिश्री ने विशेष रूप से इस प्रश्न पर विचार रखा कि इस सूत्र में सम्यक दर्शन को पहले स्थान पर क्यों रखा गया है। पहले ज्ञान या पहले श्रद्धा? प्रवचन में यह स्वाभाविक प्रश्न सामने आया कि यदि व्यक्ति को पहले यह पता ही न हो कि सत्य क्या है और असत्य क्या, हेय क्या है और उपादेय क्या, तो वह किसी सिद्धांत के प्रति सही श्रद्धा कैसे रख सकता है? मुनिश्री ने समझाया कि आध्यात्मिक यात्रा में सुनना, पढ़ना, समझना और चिंतन करना आवश्यक प्रारंभिक चरण हैं। व्यक्ति जब जिनवाणी सुनता है, शास्त्रों का अध्ययन करता है और देव, गुरु तथा शास्त्र के स्वरूप को समझने का प्रयास करता है, तभी सत्य को जानने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि

ज्ञानकारी और सम्यक ज्ञान एक ही बात नहीं हैं। किसी व्यक्ति को शास्त्रों के अनेक सिद्धांत कंठस्थ हो सकते हैं। वह नौ पदार्थों, सात तत्त्वों अथवा जैन दर्शन की विभिन्न अवधारणाओं की व्याख्या भी कर सकता है, लेकिन यदि उसके भीतर सत्य के प्रति संदेह, विपरीत धारणा या केवल परंपरागत रखा कि इस सूत्र में सम्यक दर्शन को पहले स्थान पर क्यों रखा गया है। पहले ज्ञान या पहले श्रद्धा? प्रवचन में यह स्वाभाविक प्रश्न सामने आया कि यदि व्यक्ति को पहले यह पता ही न हो कि सत्य क्या है और असत्य क्या, हेय क्या है और उपादेय क्या, तो वह किसी सिद्धांत के प्रति सही श्रद्धा कैसे रख सकता है? मुनिश्री ने समझाया कि आध्यात्मिक यात्रा में सुनना, पढ़ना, समझना और चिंतन करना आवश्यक प्रारंभिक चरण हैं। व्यक्ति जब जिनवाणी सुनता है, शास्त्रों का अध्ययन करता है और देव, गुरु तथा शास्त्र के स्वरूप को समझने का प्रयास करता है, तभी सत्य को जानने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि

अनुसार सच्ची श्रद्धा अंधविश्वास नहीं है। यह सत्य को समझने, विचार करने, परखने और अंततः उसे आत्मा से स्वीकार करने की अवस्था है। सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान का युगपत उदय प्रवचन का महत्वपूर्ण पक्ष सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान के पारस्परिक संबंध की व्याख्या रहा। मुनिश्री ने बताया कि दोनों का उदय युगपत् अर्थात एक साथ होता है। उन्होंने इसे दीपक और उसके प्रकाश के उदाहरण से समझाया। जिस क्षण दीपक प्रज्वलित होता है, उसी क्षण उसका प्रकाश भी प्रकट होता है। दोनों को अलग–अलग समय में उत्पन्न होने वाली अवस्थाओं के रूप में नहीं देखा जा सकता। इसी प्रकार आत्मा में सम्यक दर्शन का उदय होने पर उपलब्ध ज्ञान भी सम्यक ज्ञान के रूप में प्रकट होता है। हालांकि दोनों का उदय एक साथ होता है, लेकिन उनके कारण–कार्य संबंध को समझना आवश्यक है। मुनिश्री ने बताया कि सम्यक दर्शन कारण है और सम्यक ज्ञान उसका कार्य, इसलिए आचार्य उमास्वामी ने

मोक्षमार्ग के सूत्र में सम्यक दर्शन को पहले स्थान पर रखा। चिकित्सक के उदाहरण से समझाया अंतर गूढ़ दार्शनिक अवधारणा को सरल बनाने के लिए मुनिश्री ने चिकित्सक का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को बीमारी है और वह किसी विशेषज्ञ चिकित्सक से उपचार कराना चाहता है, तो वह पहले डॉक्टर की डिग्री, अनुभव, विशेषज्ञता, उपचार पद्धति और अन्य लोगों के अनुभवों के बारे में जानकारी जुटाता है। लेकिन केवल डॉक्टर की योग्यता के बारे में पढ़ लेना और उस चिकित्सक पर विश्वास करके उसका उपचार स्वीकार करना दो अलग–अलग अवस्थाएं हैं। इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में भी व्यक्ति शास्त्र पढ़ सकता है, प्रवचन सुन सकता है और सिद्धांतों को समझ सकता है। लेकिन जब उन सिद्धांतों के सत्य स्वरूप के प्रति उसके भीतर दृढ़ श्रद्धा उत्पन्न होती है, तभी ज्ञान उसके जीवन को वास्तविक दिशा देने लगता है। केवल कर्मकांड नहीं, आत्मपरिवर्तन जरूरी मुनिश्री ने

साधकों को सचेत करते हुए कहा कि धर्म को केवल कुलाचार, परंपरा, बाहरी कर्मकांड अथवा शास्त्रीय शब्दों के स्मरण तक सीमित करना आध्यात्मिक यात्रा के उद्देश्य को सीमित कर देता है। धर्म का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति की दृष्टि, विचार और आचरण में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। उन्होंने साधकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से पूछना चाहिएकृहम जो कुछ जानते हैं, क्या उसे वास्तव में सत्य के रूप में स्वीकार भी करते हैं? हमारी श्रद्धा केवल परंपरा के कारण है या हमने स्वयं उसका परीक्षण और चिंतन किया है? और सबसे महत्वपूर्ण, क्या हमारे ज्ञान ने हमारे जीवन में कोई परिवर्तन किया है? यही आत्मचिंतन ज्ञान को जीवन से जोड़ता है। जब ज्ञान के साथ सही दृष्टि और निर्मल श्रद्धा जुड़ती है, तब वह केवल बौद्धिक जानकारी नहीं रहता, बल्कि आत्मपरिवर्तन का माध्यम बनता है। समाचार प्रेषक विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु।

विद्यारण्य नगर में गणेशोत्सव में सेवा का संदेश, महेंद्र मुणोत ने जरूरतमंद बच्चों को बांटी शिक्षण सामग्री

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com
 बेंगलुरु, 5 अक्टूबर 2026। विद्यारण्य नगर में क्षेत्र के नागरिकों की ओर से आयोजित गणेश उत्सव कार्यक्रम श्रद्धा, सेवा और सामाजिक सहभागिता



के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे महेंद्र मुणोत ने भगवान गणपति के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर उन्होंने जरूरतमंद बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित की तथा आयोजित अन्नदान कार्यक्रम में भी सेवा प्रदान की। गणेश उत्सव के दौरान आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्र के नागरिकों और आयोजकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। महेंद्र मुणोत ने बच्चों के बीच शिक्षण सामग्री वितरित करते हुए शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। इसके साथ ही अन्नदान कार्यक्रम में सहभागिता कर सेवा कार्य में योगदान दिया। आयोजकों की ओर से महेंद्र मुणोत का सम्मान भी किया गया। इस दौरान उपस्थित नागरिकों ने सामाजिक सेवा और जरूरतमंदों की सहायता को धार्मिक आयोजनों से जोड़ने की पहल की सराहना की। कार्यक्रम में गणेश उत्सव के धार्मिक वातावरण के साथ सामाजिक सरोकारों को भी प्रमुखता दी गई। आयोजकों के अनुसार, ऐसे आयोजनों का उद्देश्य धार्मिक आस्था के साथ समाज में सेवा, सहयोग और जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशीलता की भावना को बढ़ावा देना है। समाचार प्रेषक उपेन्द्र कुमार बेंगलुरु।

यलहंका में दुर्गा पूजा महोत्सव की तैयारियों पर मंथन, 11 से 21 अक्टूबर तक आयोजन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
 बेंगलुरु, 5 अक्टूबर 2026। विश्व हिंदू धर्म रक्षक सेवा समिति (आर–329) के यलहंका न्यू टाउन, 4थ फेस



स्थित मुख्य कार्यालय में आगामी दुर्गा पूजा महोत्सव की तैयारियों को लेकर महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में आयोजन को व्यवस्थित, सुरक्षित और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने को लेकर विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा हुई। बैठक की अध्यक्षता समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र कुमार (जीतू

पंडित) ने की। इस दौरान संस्था के मुख्य मार्गदर्शक राम भरोसा यादव और रंजीत कुमार राय सहित महिला मंडल अध्यक्ष स्नेह लता दुबे, पूजा देवी और रेखा नायक मौजूद रहीं।

कार्यक्रम के दौरान शांति और अनुशासन बनाए रखने जैसे विषय प्रमुख रूप से चर्चा में रहे। समिति पदाधिकारियों ने कहा कि धार्मिक आयोजन को सफल बनाने के लिए सामूहिक सहभागिता और सहयोग आवश्यक है। समिति की ओर से समाज के लोगों से तन–मन–धन से सहयोग करने तथा आयोजन में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया गया। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने आगामी दुर्गा पूजा महोत्सव को आपसी सहयोग, समन्वय और सामाजिक सहभागिता के साथ सफल बनाने का संकल्प लिया। पदाधिकारियों ने कहा कि आयोजन के दौरान व्यवस्थाओं को बेहतर बनाए रखने के लिए सभी संबंधित कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र कुमार (जीतू) ने कहा कि आयोजन के दौरान व्यवस्थाओं को बेहतर बनाए रखने के लिए सभी संबंधित कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र कुमार (जीतू) ने कहा कि आयोजन के दौरान व्यवस्थाओं को बेहतर बनाए रखने के लिए सभी संबंधित कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी।



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
 हैदराबाद, 5 अक्टूबर 2026। कलम दवात कायस्थ समाज (KDKS), हैदराबाद की नई कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। सोमाजीगुडा स्थित संस्था के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित बैठक में समाज की आगामी गतिविधियों और 11 नवंबर को होने वाले चित्रगुप्त पूजा समारोह की तैयारियों को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। संस्था के संस्थापक बी.के. करना तथा मार्गदर्शक मंडल के अध्यक्ष गणेश प्रसाद

श्रीवास्तव, पूर्व कमांडेंट सीआरपीएफ, के मार्गदर्शन में आयोजित बैठक में नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इसमें धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा को अध्यक्ष, अनामिका करना को उपाध्यक्ष, सुनील कुमार श्रीवास्तव को महासचिव, अजय कुमार दास को सहसचिव, अनूप कुमार सिन्हा को कोषाध्यक्ष तथा कुमार विजय विकास अम्ब्वट को संयोजक मनोनीत किया गया। सलाहकार समिति के अध्यक्ष के रूप में जी.पी. श्रीवास्तव, पूर्व सीआरपीएफ कमांडेंट, को जिम्मेदारी दी गई। समिति के सदस्यों में सुशील श्रीवास्तव, अरविंद



वर्मा, ज्योति नारायण और शिल्पी भटनागर को शामिल किया गया। वहीं नई समिति को मजबूती देने के लिए ओम प्रकाश सिन्हा, डॉ. शिवकुमार, ए. प्रमुनाथ कुमार सिन्हा उर्फ पप्पू जी और उमेश कुमार करना को सदस्य बनाया गया। संस्था के सह–संस्थापक जे.पी. लाल बैठक में अनुपस्थित रहे। उन्हें बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी ई–मेल के माध्यम से देने की बात कही गई। 11 नवंबर को चित्रगुप्त पूजा का भव्य आयोजन संस्था के अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा और महासचिव सुनील

कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि 11 नवंबर 2026, बुधवार को ऊपुगुडा स्थित ऐतिहासिक चित्रगुप्त देवालय में भव्य चित्रगुप्त पूजा का आयोजन किया जाएगा। चारमीनार के समीप उर्फ पप्पू जी और उमेश कुमार करना को सदस्य बनाया गया। संस्था के सह–संस्थापक जे.पी. लाल बैठक में अनुपस्थित रहे। उन्हें बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी ई–मेल के माध्यम से देने की बात कही गई। 11 नवंबर को चित्रगुप्त पूजा का भव्य आयोजन संस्था के अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा और महासचिव सुनील

से प्रतिवर्ष ऐतिहासिक चित्रगुप्त देवालय में इस आयोजन का संचालन किया जाता है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से चित्रांश परिवार और कलमधारी श्रद्धालु भाग लेते हैं। मेडवल, हयातनगर, तिरुमलागिरी, हाईटेक सिटी सहित हैदराबाद के विभिन्न क्षेत्रों से कायस्थ समाज के लोगों के पूजा समारोह में पहुंचने की उम्मीद है। आयोजकों ने कहा कि इस अवसर पर चित्रांश परिवारों को मंदिर में अभिषेक, पूजा–अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों में सहभागी बनने का अवसर मिलेगा। संस्था के अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा ने सभी चित्रांश परिवारों से अधिक से अधिक संख्या में पूजा समारोह में शामिल होने का आह्वान किया। संस्थापक बी.के. करना ने पूजा से संबंधित व्यवस्थाओं के लिए अलग समिति गठित करने का सुझाव दिया और आयोजन को भव्य एवं व्यवस्थित बनाने के लिए सभी सदस्यों को सक्रिय भाूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। बैठक के अंत में प्रमुनाथ सिन्हा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। समाचार प्रेषक सुनील श्रीवास्तव, रानीगज, सिकंदराबाद, तेलंगाना।

आखिरी गेंद तक चला रोमांच, राजेश्वर क्रिकेट क्लब चेन्नई बना साउथ इंडिया आंजणा समाज टूर्नामेंट का चौंपियन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
 बेंगलुरु, 5 अक्टूबर 2026। साउथ इंडिया आंजणा समाज टूर्नामेंट बेंगलुरु सीजन–1 के फाइनल में रोमांचक मुकाबले के बाद राजेश्वर क्रिकेट क्लब चेन्नई ने अर्बुदा वॉरियर्स को 6 विकेट से हराकर खिताब अपने नाम कर लिया। फाइनल मुकाबला आखिरी गेंद तक रोमांच से भरपूर रहा और दोनों टीमों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली। फाइनल मुकाबले में राजेश्वर क्रिकेट क्लब चेन्नई ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया और अर्बुदा वॉरियर्स को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। अर्बुदा वॉरियर्स ने निर्धारित 8 ओवर में 102 रन का लक्ष्य खड़ा किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी राजेश्वर क्रिकेट क्लब

चेन्नई की टीम ने दबाव के बीच शानदार बल्लेबाजी करते हुए मुकाबला 6 विकेट से अपने नाम कर लिया। मैच के दौरान हर गेंद के साथ रोमांच



बढ़ता गया और दर्शकों की धड़कनें अंतिम क्षणों तक बढ़ी रहीं। निर्णायक बल्ले में राजेश्वर क्रिकेट क्लब ने लक्ष्य हासिल कर टूर्नामेंट की चमचमती ट्रॉफी पर कब्जा जमाया। फाइनल मुकाबले में राजेश्वर क्रिकेट क्लब

चेन्नई के बल्लेबाज चेलाराम भवरानी के प्रदर्शन को निर्णायक माना गया। उनके प्रभावी खेल के लिए उन्हें मैन ऑफ द मैच के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विजेता टीम को ट्रॉफी के साथ विनिंग प्राइजमनी भी प्रदान की गई। चेन्नई पहुंचने पर चौंपियन टीम का सम्मान खिताब जीतने के बाद राजेश्वर क्रिकेट क्लब चेन्नई की टीम के चेन्नई पहुंचने पर श्री राजेश्वर मंदिर में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान टीम के खिलाड़ियों का चौंपियन समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने विजेता खिलाड़ियों और टीम प्रबंधन को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। समारोह में खिलाड़ियों के प्रदर्शन और टीम की

सफलता की सराहना की गई। टीम प्रबंधन की भूमिका भी अहम राजेश्वर क्रिकेट क्लब चेन्नई की इस सफलता में टीम मालिक ललित पटेल, कप्तान गोविंद पटेल और टीम प्रबंधन से जुड़े जगमूाई पटेल की भूमिका महत्वपूर्ण रही। टीम ने पूरे टूर्नामेंट में सामूहिक प्रदर्शन के दम पर फाइनल तक का सफर तय किया और निर्णायक मुकाबले में जीत दर्ज कर खिताब अपने नाम किया। टूर्नामेंट के फाइनल में मिली जीत के साथ राजेश्वर क्रिकेट क्लब चेन्नई ने साउथ इंडिया आंजणा समाज टूर्नामेंट बेंगलुरु सीजन–1 की विजेता टीम के रूप में अपनी जगह बनाई। इस उपलब्धि से टीम के खिलाड़ियों और समर्थकों में उत्साह का माहौल है। समाचार प्रेषक दिनेश कराड, चेन्नई, तमिलनाडु।

काग परिवार ने माताजी को चांदी का हार भेंट कर जताई श्रद्धा, संत पुष्कर दास जी महाराज ने दी मंगलकामनाएं



श्रद्धा से जुड़े एक भावपूर्ण अवसर पर स्वर्गीय श्री भंवरलाल जी काग की धर्मपत्नी श्रीमती पारकी देवी को उनके परिवार की ओर से माताजी को चांदी का हार भेंट किया गया।

काग परिवार ने माताजी के प्रति सम्मान, श्रद्धा और पारिवारिक संस्कारों की भावना को व्यक्त करते हुए यह भेंट अर्पित की। श्रीमती पारकी देवी मूल रूप से झूठा गांव की निवासी हैं और वर्तमान में अड़कमारगहल्ली, बेंगलुरु में निवास कर रही हैं। उनके सुपुत्र श्री उमेश जी, श्री बाबूलाल जी और श्री मोहनलाल जी काग सहित परिवार के सदस्यों ने माताजी को चांदी का हार भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर श्री मातेश्वरी भक्त मंडल,

दौड़गुब्बी के संस्थापक संत पुष्कर दास जी महाराज ने काग परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने परिवार द्वारा माताजी के सम्मान में की गई इस पहल की सराहना करते हुए परिवार को धन्यवाद, साधुवाद और शुभ आशीर्वाद प्रदान किया। संत पुष्कर दास जी महाराज ने काग परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और पारिवारिक एकता की मंगलकामना की। उन्होंने कहा कि माता–पिता एवं वरिष्ठजनों के प्रति सम्मान भारतीय पारिवारिक और सांस्कृतिक परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऐसे अवसर परिवार में संस्कार, श्रद्धा और आपसी सद्भाव को मजबूत करते हैं। कार्यक्रम के दौरान काग परिवार ने संत पुष्कर दास जी महाराज के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके आशीर्वाद के लिए आभार जताया। धार्मिक भावना और पारिवारिक श्रद्धा से जुड़े इस अवसर ने उपस्थित लोगों के बीच सकारात्मक एवं आत्मीय वातावरण बनाया।



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
 बेंगलुरु, 5 अक्टूबर 2026। श्री सीरवी समाज कर्नाटक ट्रस्ट (रजि.

) बलेपेट बेंगलुरु में गौ संरक्षण और गौ सेवा के प्रति जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे गौ सम्मान अभियान को समाजबंधुओं

का उत्साहजनक समर्थन मिल रहा है। अभियान के माध्यम से समाज में गौवंश के प्रति सम्मान, सेवा और संरक्षण की भावना को मजबूत करने

का प्रयास किया जा रहा है। अभियान से जुड़े समाजबंधुओं के अनुसार, गौ सम्मान अभियान को लेकर समाज के विभिन्न वर्गों में सकारात्मक प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। बड़ी संख्या में लोगों ने अभियान से जुड़कर गौ सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है। समाज के लोगों का मानना है कि गौवंश की सेवा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और मानवीय संवेदना से भी जुड़ा हुआ है। अभियान के माध्यम से लोगों को गौ संरक्षण के प्रति जागरूक करने तथा जरूरतमंद गौवंश की सेवा

में सहयोग के लिए प्रेरित किया जा रहा है। गौ सम्मान अभियान को मिले बेहतर रिसर्पोन्स से आयोजकों और समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं में उत्साह है। उनका कहना है कि समाज की सामूहिक भागीदारी से ऐसे सेवा अभियानों को और व्यापक स्तर तक पहुंचाया जा सकता है। अभियान से जुड़े लोगों ने समाजबंधुओं से अपील की कि गौ सेवा एवं संरक्षण के कार्यों में अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग करते हुए इस जन–जागरूकता अभियान को निरंतर आगे बढ़ाएं। समाचार प्रेषक सोहनलाल सीरवी बेंगलुरु।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676